इंडियन पीपुल्स थिएटर एशोसिएशन का जन्म जिस विचारधारा के तहत हुआ जिसमें कला का महत्व सिर्फ कला के लिए नहीं बल्कि जीवन के लिए माना गया है। उस विचार धारा के तहत पटना इप्टा लगातार अपनी प्रस्तुतियों के माध्यम से युगीन यथार्थ पर चोट करता रहा है। चाहे वह मंचीय नाटक हो या नुक्कड़ नाटक सभी के माध्यम से वह अपना प्रतिरोध दर्ज करता रहा। चाहे भीष्म साहनी लिखित नाटक 'कबीरा खड़ा बाजार में' हो जिसके माध्यम से सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक सद्भाव को सहिष्णुता की महान परंपरा को कुछ सांप्रदायिक फासिस्ट ताकतों द्वारा नष्ट करने की साजिश में संलिप्त दिखाया गया हो या स्वदेश दीपक लिखित नाटक 'कोर्ट मार्शल' के माध्यम से एक कोढ़ की तरह वर्षों से हमारे समाज में विद्यमान जातिवाद, जिसे सेना के कोर्टमार्शल के द्वारा उद्घटित किया गया हो या शाहिद अनवर लिखित नाटक 'सूपनवां का सपना' में छोटे वर्गों के लोगों के सपने को कुचलते दिखाया गया हो या अलखनंदन जी द्वारा लिखित नाटक 'नंगा राजा' (मूल शीर्षक, उजबक राजा तीन डकैत) जिसके माध्यम से हमारे लघु कुटीर उद्योगों पर षड्यंत्रपूर्ण ढंग से हमले एवं बहुराष्ट्रीय कंपनियों के माध्यम से सुनियोजित तरीके से लूटपाट दिखाया है या भारतेंदु लिखित नाटक 'डार्क सिटी स्टुपिडकिंग' (मूल शिर्षक अंधेर नगरी) के माध्यम से भ्रष्ट शासन व्यवस्था को उजागर किया गया हो।

इस तरह से कहा जा सकता है कि पटना इप्टा कभी अपनी विचारधारा से विचलित नहीं हुई है और वह लोक कल्याण के लिए उपरोक्त नाटकों के अतिरिक्त ऐसे ही अन्य नाटकों, मंचीय और नुक्कड़ के माध्यम से लगातार कार्य करती रही है।